- **Document Title (English):** Historical Record of the Battle of Bithu (1273 AD): The Defense of Marwar
- **Document Title (Hindi):** बीठू के महा-संग्राम (1273 ई.) का ऐतिहासिक अभिलेख: मारवाड़ का जन-रक्षा संग्राम
- **Author / Researcher:** Govind Malviya (REAL HI STORY)
- **Archive Date:** 30th August 2026
- **Primary Sources Referenced:** Bithu Hero Stone Inscription (1273 AD / VS 1330), Muhnot Nainsi ri Khyat, Jodhpur Rajya ri Khyat, Marwar Epigraphical Studies
- **Subject Headings:** Medieval Indian History, Marwar Region, Rao Siha, Rathore Dynasty, Battle of Bithu, Paliwal, Meghwal, Bhil Warriors, Delhi Sultanate Raids
- **Classification:** Open Access Historical Archive / Educational Reference Document

बीठू का महा-संग्राम (1273 ई.): मारवाड़ का प्रथम संगठित धर्म व प्रजा-रक्षा युद्ध

13वीं शताब्दी का उत्तरार्ध मारवाड़ (पश्चिम राजस्थान) के राजनीतिक और सामाजिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण संधि-काल था। सन् 1273 ई. (कार्तिक सुदी 12, विक्रम संवत 1330) में पाली जिले के **बीठू (Bithu)** गाँव के क्षेत्र में लड़ा गया संग्राम केवल राजनीतिक महत्वाकांक्षा का परिणाम नहीं था, बल्कि यह स्थानीय प्रजा, गौ-धन और धर्म की रक्षा के लिए लड़ा गया एक ऐतिहासिक जन-संग्राम था।

इस युद्ध का मुख्य नेतृत्व कन्नौज/बदायूँ क्षेत्र से आए सूर्यवंशी योद्धा **राव सीहा जी (राठौड़ वंश के संस्थापक)** ने किया था। उस समय नागौर, दिल्ली के सुल्तान घियासुद्दीन बलबन की सल्तनत का एक प्रमुख सैन्य केंद्र (इक़्ता) था, जहाँ से शाही गश्ती दल और धावड़े आसपास के समृद्ध व्यापारिक क्षेत्रों पर सैन्य छापे मारते थे।

2. युद्ध का कारण एवं सामाजिक एकजुटता

पाली का क्षेत्र तत्कालीन समय में **पालीवाल ब्राह्मणों** का एक प्रमुख व्यापारिक और कृषि केंद्र था। पालीवालों के पास वृहद मात्रा में गौ-धन (मवेशी) तथा संपत्ति थी। जब नागौर के शाही तुर्क गश्ती दस्ते ने अचानक हमला कर पाली के गौ-धन को घेरा और लूटपाट शुरू की, तो स्थानीय नागरिकों ने राव सीहा जी से रक्षा का आग्रह किया।

इस युद्ध की सबसे बड़ी विशेषता इसका व्यापक सामाजिक ढाँचा था:

- **राठौड़ घुड़सवार:** राव सीहा जी के कुशल और प्रशिक्षित सैन्य दस्ते ने मुख्य मारक बल के रूप में नेतृत्व किया।
- **पालीवाल रक्षक:** रसद, वित्तीय सहयोग और स्थानीय रक्षकों के रूप में अग्रिम मोर्चे पर डटे।
- **भील धनुर्धर:** अरावली की तलहटी और मरुस्थलीय टीलों से अचूक बाण-वर्षा करने वाले पारंपरिक योद्धा।
- **मेघवाल रक्षक दल:** गाँव की 'राखवाली' (सुरक्षा प्रथा) और पैदल रक्षक बल के रूप में मुस्तैद वीर।

3. बीठू का युद्ध क्षेत्र एवं बलिदान

नागौर की सैन्य टुकड़ी के मुकाबले राव सीहा जी के पास लगभग 300 वफादार योद्धाओं का बल था। चारण-ख्यात साहित्य में विरोधी दल को "लाखों की फ़ौज" का आख्यान दिया गया है, जो पारंपरिक लोक-शब्दावली में अत्यधिक संख्याबल का प्रतीक है।

बीठू के मैदान में हुए इस भीषण युद्ध में:

1. **अग्रिम प्रहार:** भील धनुर्धरों की बाण-वर्षा ने हमलावर टुकड़ी के अग्रिम मोर्चे को छिन्न-भिन्न कर दिया।
2. **अश्वरोही आक्रमण:** राव सीहा के नेतृत्व में राठौड़ घुड़सवारों ने दुश्मन की कतारों को भेद दिया।
3. **पैदल मुकाबला:** मेघवाल और पालीवाल वीरों ने कटारों और भालों से आमने-सामने की जंग लड़ी।

भीषण रक्तपात के पश्चात हमलावर सेना को लूटा गया गौ-धन छोड़कर पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा। हालांकि, इस रक्षात्मक विजय की कीमत राव सीहा जी और उनके सैकड़ों सह-योद्धाओं ने अपने प्राण देकर चुकाई।

4. बीठू का देवली शिलालेख (ऐतिहासिक साक्ष्य)

पाली जिले के बीठू गाँव में स्थापित **राव सीहा जी की देवली (Hero Stone)** इस ऐतिहासिक घटना का सबसे ठोस अभिलेखीय साक्ष्य है।

शिलालेख का विवरण:

- **तिथि:** संवत 1330, कार्तिक सुदी 12 (1273 ई.)
- **सामग्री:** लाल बलुआ पत्थर पर उत्कीर्ण देवल
- **महत्व:** यह मारवाड़ में राठौड़ सत्ता की स्थापना और धर्म-रक्षा के प्रथम प्रामाणिक दस्तावेज के रूप में स्वीकृत है।

The Battle of Bithu (1273 AD): Marwar's Epic Stand for Regional Defense

The late 13th century marked a crucial transition period in the socio-political landscape of Marwar (Western Rajasthan). The **Battle of Bithu**, fought in 1273 AD (Vikram Samvat 1330) near present-day Pali district, stands out as a monumental conflict fought not for territorial expansion, but for the protection of local communities, livestock, and faith.

The defense was organized under **Rao Siha Ji**, the emigrant prince from the Kannauj/Badaun region who founded the Rathore line in Marwar. During this era, Nagaur functioned as a key military garrison (*Iqta*) for the Delhi Sultanate under Sultan Ghiyas-ud-din Balban, conducting periodic raids on prosperous trade settlements.

2. Catalyst & Social Structure of Resistance

Pali was a highly prosperous mercantile hub, primarily inhabited by the **Paliwal Brahmins**, who maintained extensive agrarian assets and cattle herds. When an imperial raiding force from Nagaur besieged the region to capture the livestock, the local community sought the protection of Rao Siha Ji.

Historical and bardic analyses indicate a unified multi-community defense front:

- **Rathore Cavalry:** Formed the core shock-troop detachment under the direct command of Rao Siha Ji.
- **Paliwal Defenders:** Provided tactical intelligence, financial backing, and combat support.
- **Bhil Archers:** Supplied lethal long-range artillery support using traditional archery tactics from high dunes and terrain.
- **Meghwal Defense Units:** Acted as infantry line defenders, following the regional *Rakhwali* (protective guardianship) framework.

3. Engagement at Bithu & Tactical Outcome

Faced with an imperial force traditionally described in regional bardic literature as numbering "in the lakhs" (representing an overwhelming numerical superiority), Rao Siha Ji deployed a vanguard of roughly 300 trained combatants.

The battle at Bithu developed into an intense, close-quarters engagement:

- Initial volley fire from Bhil archery units disrupted the enemy's advancing ranks.
- Heavy cavalry charges led by Rathore knights broke through the raiding party's formations.
- Hand-to-hand infantry combat by local defenders prevented the retreat of the captured livestock.

The defense successfully forced the Sultanate force to abandon the seized cattle. However, Rao Siha Ji and a significant number of his allied combatants fell on the battlefield, securing martyrdom (*Veergati*).

4. Epigraphic Evidence: The Bithu Inscription

The primary physical evidence of this battle remains the **Hero Stone (Deval) of Rao Siha Ji**, preserved at Bithu village in Pali district, Rajasthan.

Inscription Details:

- **Date:** Vikram Samvat 1330, Kartik Sudi 12 (1273 AD)
- **Medium:** Engraved Red Sandstone Monolith
- **Significance:** Serves as the earliest dated epigraphic landmark of Rathore history in Marwar and documents the defense of local heritage.

© 30th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY). drmalviya0@gmail.com